एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खुरमानी: हिमाचल प्रदेश में भविष्य की लाभकारी नकदी फसल

*दिशा ठाकुर[1], अभय शर्मा[1], मनीष ठाकुर[2], जोगिंदर सिंह[1] एवं विजय कुमार[1]

[1]क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र, बजौरा, कुल्लू, डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश

[2]बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, थुनाग, गोहर (गुधरी), डॉ. यशवंत सिंह परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी, सोलन, हिमाचल प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: dishathaku.223@gmail.com

हिमाचल प्रदेश को "फल राज्य" के रूप में जाना जाता है, यहाँ सेब के साथ-साथ नाशपाती, आड़ू, प्लम, चेरी तथा खुरमानी जैसी समशीतोष्ण फल फसलें किसानों की आजीविका का प्रमुख आधार हैं। वर्तमान समय में जलवायु परिवर्तन, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा बाजार की बदलती मांग ने किसानों को ऐसी फसलों की ओर आकर्षित किया है, जो कम समय में अधिक लाभ प्रदान करें। ऐसी परिस्थितियों में खुरमानी (Apricot, *Prunus armeniaca* L.) एक उभरती हुई उच्च मूल्य वाली नकदी फसल है, जिसमें हिमाचल प्रदेश के पर्वतीय क्षेत्रों के लिए अपार संभावनाएँ निहित हैं। खुरमानी न केवल स्वादिष्ट एवं पौष्टिक फल है, बल्कि इससे सूखी खुरमानी, जैम, जेली, स्क्वैश, जूस, कैंडी, गुठली का तेल तथा अनेक मूल्य संवर्धित उत्पाद तैयार किए जा सकते हैं। यही कारण है कि विश्वभर में इसकी मांग निरंतर बढ़ रही है। भारत में खुरमानी की खेती मुख्यतः हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, लद्दाख, उत्तराखंड तथा अरुणाचल प्रदेश के समशीतोष्ण क्षेत्रों में की जाती है। हिमाचल प्रदेश में कुल्लू, किन्नौर, लाहौल-स्पीति, चम्बा, शिमला, मंडी तथा सिरमौर के अनेक क्षेत्रों की जलवायु इसकी खेती के लिए उपयुक्त है। राज्य में अधिकांश पुराने बाग बीज से तैयार पौधों पर आधारित हैं, जिसके कारण फल का आकार, रंग, गुणवत्ता तथा उत्पादन में काफी भिन्नता देखने को मिलती है। अब समय की आवश्यकता है कि किसानों को प्रमाणित पौध, उन्नत किस्में तथा आधुनिक बाग प्रबंधन तकनीक उपलब्ध कराई जाए, ताकि उत्पादन के साथ-साथ गुणवत्ता और बाजार मूल्य भी बढ़ सके।

खुरमानी क्यों बन रही है भविष्य की लाभकारी फसल

आज के उपभोक्ता ऐसे फलों को प्राथमिकता दे रहे हैं जो स्वादिष्ट, पौष्टिक, आकर्षक तथा स्वास्थ्यवर्धक हों। खुरमानी इन सभी गुणों से भरपूर है। इसके अतिरिक्त इसके अनेक ऐसे गुण हैं जो इसे किसानों के लिए लाभकारी बनाते हैं

- प्रारम्भिक किस्मों से मई माह में ही बाजार में प्रवेश।
- ताजे एवं प्रसंस्कृत दोनों रूपों में अच्छी मांग।
- सूखी खुरमानी एवं गिरी से अतिरिक्त आय।
- कम पानी वाले पर्वतीय क्षेत्रों के लिए उपयुक्त।
- पर्यटन क्षेत्रों में उच्च गुणवत्ता वाले फलों की बढ़ती मांग।

यदि किसान आधुनिक किस्मों का चयन कर वैज्ञानिक ढंग से बाग लगाएँ, तो खुरमानी भविष्य में हिमाचल प्रदेश की प्रमुख नकदी फसलों में शामिल हो सकती है।

पोषण एवं औषधीय महत्व

खुरमानी को "सुपर फ्रूट" भी कहा जाता है क्योंकि इसमें अनेक महत्वपूर्ण पोषक तत्व पाए जाते हैं। इसके नियमित सेवन से रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है, आँखों का स्वास्थ्य बेहतर रहता है तथा हृदय एवं पाचन तंत्र को लाभ मिलता है। सूखी खुरमानी में ऊर्जा एवं खनिज तत्व अधिक सघन मात्रा में पाए जाते हैं।

आधुनिक एवं पारंपरिक किस्मों का महत्व

पिछले दो दशकों में यूरोप में अनेक नई खुरमानी की किस्में विकसित की गई हैं, जिनका उद्देश्य था-अत्यंत प्रारम्भिक पकने का समय, आकर्षक रंग, बड़े आकार के फल, अधिक मिठास तथा लंबी दूरी तक परिवहन की क्षमता।

इनमें से कई किस्में भारतीय परिस्थितियों में भी परीक्षण के योग्य मानी जा रही हैं। इनके साथ-साथ भारतीय परिस्थितियों में सफल पारंपरिक किस्मों का भी अपना महत्व है।

खुरमानी की प्रमुख किस्मों एवं तुड़ान अवधि का विवरण

क्रमांक	किस्म	किस्म का विवरण	तुड़ान का समय
1	बोरसालिनो (Borsalino)	बहुत अगेती किस्म। फल मध्यम से बड़े, गोल, नारंगी रंग के तथा लाल blush वाले होते हैं। फल आकर्षक, अच्छे दृढ़ता)Firmness) तथा स्वाद वाले होते हैं।	अप्रैल मध्य–मई प्रारम्भ
2	मिकाडो (Mikado)	अगेती किस्म। फल बड़े, गोल तथा आकर्षक नारंगी रंग के होते हैं, जिन पर लाल ब्लश विकसित हो सकता है। गूदा रसदार एवं स्वादिष्ट होता है।	मई प्रारम्भ–मध्य
3	वंडर कॉट (Wonder Cot)	अगेती किस्म। फल बड़े, आकर्षक नारंगी रंग के तथा लाल ब्लश वाले होते हैं। गूदा अपेक्षाकृत दृढ़, रसदार एवं स्वादिष्ट होता है।	मई मध्यअंत–
4	रुबाइल (Rubile)	मध्यम आकार से बड़े फल वाली किस्म। फल नारंगी से लालिमा लिए हुए, आकर्षक तथा रसदार होते हैं। स्वाद अच्छा और ताजे उपभोग के लिए उपयुक्त।	मई अंतजून – प्रारम्भ
5	बोलेरो (Bolero)	मध्यमौसमी किस्म। फल मध्यम से बड़े-, अंडाकार तथा नारंगीलाल रंग के - अच्छी गुणव होते हैं। फल आकर्षक औरत्ता वाले होते हैं।	मई अंतजून – प्रारम्भ
6	रुबिस्टा (Rubista)	अगेती किस्म। फल आकर्षक लालनारंगी रंग के-, सुगंधित एवं स्वादिष्ट होते हैं। फल में अच्छी मिठास तथा बाजार योग्य आकर्षकता होती है।	जून प्रारम्भ
7	क्योटो (Kioto)	मध्यम से बड़े, आकर्षक नारंगी फल, जिनके ऊपर काफी भाग में लाल ब्लश हो सकता है। फल रसदार तथा अच्छे स्वाद वाले होते हैं।	जून प्रारम्भ–मध्य
8	बर्जरॉन (Bergeron)	अपेक्षाकृत पछेती किस्म। फल मध्यम से बड़े, नारंगी रंग के तथा लाल ब्लश वाले होते हैं। गूदा दृढ़, सुगंधित एवं संतुलित स्वाद वाला होता है। ताजे उपयोग एवं प्रसंस्करण दोनों के लिए उपयुक्त।	जून मध्य–अंत

खुरमानी की विभिन्न किस्मों की फल आकृति एवं पहचान

बोरसालिनो (Borsalino)

मिकाडो (Mikado)

वंडर कॉट (wonder Cot)	रुबाइल (Rubile))
बोलेर (Bolero)	रुबिस्टा (Rubista)
क्योटो (Kioto)	बर्जरॉन (Bergeron)

यदि किसान इन किस्मों का उचित संयोजन अपनाते हैं, तो लगभग 60–70 दिनों तक लगातार फल उपलब्ध करा सकते हैं, जिससे उन्हें एक साथ पूरी उपज बेचने की आवश्यकता नहीं पड़ती और बेहतर मूल्य मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

अप्रैल मध्य से जून अंत तक किस्मवार हार्वेस्टिंग अवधि

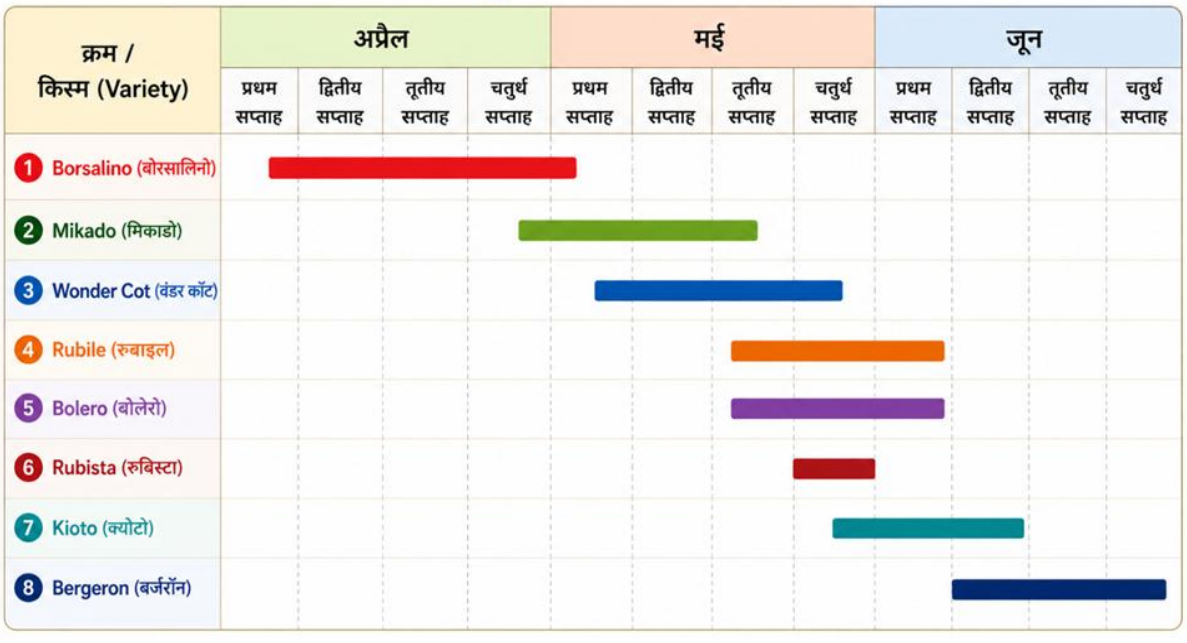

वैज्ञानिक बागवानी से बढ़ाएँ उत्पादन एवं गुणवत्ता

अच्छी किस्म का चयन करने के बाद बाग का वैज्ञानिक प्रबंधन ही अधिक उत्पादन एवं गुणवत्तापूर्ण फल प्राप्त करने की कुंजी है। आधुनिक बाजार में केवल अधिक उत्पादन पर्याप्त नहीं है, बल्कि बड़े आकार, आकर्षक रंग, बेहतर स्वाद एवं अधिक शेल्फ लाइफ वाले फलों की मांग बढ़ रही है। इसलिए किसानों को उत्पादन के साथ-साथ गुणवत्ता पर भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

बाग की स्थापना

खुरमानी के लिए गहरी, उपजाऊ तथा अच्छी जल निकास वाली दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। जलभराव वाले क्षेत्रों में इसकी खेती नहीं करनी चाहिए। पौध लगाने से पूर्व भूमि की अच्छी तरह तैयारी कर गड्ढों में अच्छी तरह सड़ी हुई गोबर की खाद मिलानी चाहिए। हिमाचल प्रदेश की परिस्थितियों में अधिकांश क्षेत्रों में 6 × 6 मीटर की दूरी उपयुक्त रहती है। जहाँ आधुनिक रूटस्टॉक एवं वैज्ञानिक प्रबंधन उपलब्ध हो, वहाँ मध्यम घनत्व (Medium Density) प्रणाली पर भी विचार किया जा सकता है।

संतुलित पोषण प्रबंधन

उच्च उत्पादन के लिए केवल नाइट्रोजन पर्याप्त नहीं है। पौधों को संतुलित मात्रा में नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश के साथ-साथ सूक्ष्म पोषक तत्वों की भी आवश्यकता होती है।

विशेष रूप से—

- बोरॉन पुष्पन एवं फलधारण में सहायक है।
- कैल्शियम फल की दृढ़ता एवं भंडारण क्षमता बढ़ाता है।
- जिंक नई वृद्धि एवं पत्ती विकास के लिए आवश्यक है।
- पोटाश फल के आकार, रंग एवं मिठास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मृदा एवं पत्ती परीक्षण के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग करने से उत्पादन लागत कम होती है तथा पौधों का संतुलित विकास होता है।

सिंचाई एवं जल संरक्षण

जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा का वितरण अनियमित होता जा रहा है। ऐसे में ड्रिप सिंचाई, मल्चिंग तथा वर्षा जल संचयन जैसी तकनीकें अत्यंत उपयोगी हैं। इन तकनीकों से जल की बचत होती है, खरपतवार कम उगते हैं तथा पौधों की वृद्धि बेहतर रहती है।

प्रशिक्षण एवं छंटाई

खुरमानी में उचित प्रशिक्षण (Training) एवं छंटाई (Pruning) अत्यंत आवश्यक है।

वैज्ञानिक छंटाई से—

- नई फलधारी शाखाओं का विकास होता है।
- प्रकाश एवं वायु संचार बढ़ता है।
- रोगों का प्रकोप कम होता है।
- फल का आकार एवं गुणवत्ता बेहतर होती है।

सूखी, रोगग्रस्त एवं आपस में रगड़ खाने वाली शाखाओं को समय-समय पर हटाना चाहिए।

परागण का महत्व

यद्यपि कुछ आधुनिक किस्में स्व-उपजाऊ होती हैं, फिर भी अनेक किस्मों में पर-परागण से फलधारण में उल्लेखनीय सुधार होता है। इसलिए बाग में एक से अधिक अनुकूल किस्में लगाने तथा मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने से उत्पादन में वृद्धि हो सकती है।

फल तुड़ाई एवं बाद-फसल प्रबंधन

खुरमानी अत्यंत नाजुक फल है, इसलिए इसकी तुड़ाई सावधानीपूर्वक करनी चाहिए।

- फल पूरी तरह नरम होने से पहले तोड़ें।
- सुबह या शाम के समय तुड़ाई करें।
- क्षतिग्रस्त फलों को अलग रखें।

- आकार एवं गुणवत्ता के आधार पर ग्रेडिंग करें।
- साफ एवं मजबूत डिब्बों में पैकिंग करें।
- यदि संभव हो तो प्री-कूलिंग एवं शीत भंडारण का उपयोग करें।

अच्छी पैकिंग एवं ग्रेडिंग से किसानों को बेहतर बाजार मूल्य प्राप्त होता है।

बाजार एवं निर्यात की संभावनाएँ

स्वास्थ्यवर्धक एवं प्राकृतिक खाद्य पदार्थों की बढ़ती मांग के कारण देश एवं विदेश में खुरमानी की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। आकर्षक रंग, बड़े आकार एवं उच्च गुणवत्ता वाले फलों की मांग आधुनिक खुदरा बाजारों, होटल उद्योग तथा पर्यटन क्षेत्रों में अधिक रहती है। यदि हिमाचल प्रदेश में गुणवत्तापूर्ण उत्पादन, ग्रेडिंग, पैकिंग, शीत श्रृंखला तथा ब्रांडिंग पर ध्यान दिया जाए, तो खुरमानी के निर्यात की संभावनाएँ भी विकसित की जा सकती हैं।

भविष्य की दिशा

जलवायु परिवर्तन, बदलती उपभोक्ता पसंद तथा उच्च गुणवत्ता वाले फलों की बढ़ती मांग को देखते हुए खुरमानी हिमाचल प्रदेश की सबसे संभावनाशील फल फसलों में से एक बन सकती है। विशेष रूप से प्रारम्भिक एवं उच्च गुणवत्ता वाली आधुनिक किस्मों का वैज्ञानिक मूल्यांकन, गुणवत्तायुक्त पौध उपलब्धता, प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना तथा संगठित विपणन इस क्षेत्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे।

निष्कर्ष

खुरमानी केवल एक पारंपरिक फल नहीं, बल्कि भविष्य की एक उच्च मूल्य वाली उद्यानिकी फसल है। यदि किसान आधुनिक किस्मों का चयन, वैज्ञानिक बाग प्रबंधन, संतुलित पोषण, उचित परागण, ग्रेडिंग, पैकिंग तथा मूल्य संवर्धन जैसी तकनीकों को अपनाएँ, तो यह फसल उनकी आय बढ़ाने का सशक्त माध्यम बन सकती है। हिमाचल प्रदेश की अनुकूल जलवायु, पर्यटन आधारित बाजार तथा प्रसंस्करण की व्यापक संभावनाएँ खुरमानी को आने वाले वर्षों में राज्य की महत्वपूर्ण नकदी फसलों में स्थापित कर सकती हैं।